D.A.V. PUBLIC SCHOOL, NEW PANVEL

Plot No. 267, 268, Sector-10, New Panvel,
Navi Mumbai-410206 (Maharashtra).
Phone 022-27468211, 27451793, Tel-fax-27482276,
E-mail – davnewpanvel@gmail.com, www.davnewpanvel.com

PRACTICE PAPER FOR SUMMATIVE ASSESSMENT – I
2014-2015
STD:- X

Sub: - Hindi **Time:- 3 Hours** **Marks:- 90**

.....

निर्देश - 1 इस प्रश्न पत्र में चार खण्ड हैं -क, ख, ग और घ ।
2 सभी खण्डों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3 सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए ।

.....

खण्ड ' क'

1 **निम्नलिखित गद्यांश को पढकर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छॉटकर लिखिए ।** **5**

'संतोष करना वर्तमान काल की सामयिक आवश्यक प्रासंगिकता है। संतोष का शाब्दिक अर्थ है– 'मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें अपनी वर्तमान दशा में ही मनुष्य पूर्ण सुख अनुभव करता है।' भारतीय मनीषी ने जिस प्रकार संतोष करने के लिए हमें सीख दी है उसी तरह असंतोष करने के लिए भी कहा है। चाणक्य के अनुसार हमें इन तीन उपक्रमों में संतोष नहीं करना चाहिए– 'त्रिषु नैव कर्तव्यः विद्यायां जप दानयो'ः। अर्थात विद्यार्जन में कभी संतोष नहीं करना चाहिए कि बस, बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया। इसी तरह जप और दान करने में भी संतोष नहीं करना चाहिए। हालॉकि धन के मामले में संतोष करने के लिए तो कहा गया है– 'जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।' हमें जो प्राप्त हो उसमें ही संतोष करना चाहिए।' 'साधु इतना दीजिए जामे कुटुंब समाय। मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।' संतोष सबसे बडा धन है। जीवन में संतोष रहा, शुद्ध–सात्विक आचरण और शुचिता का भाव रहा तो हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाएँगे और हमारे अंदर सत्य, निष्ठा, प्रेम, उदारता, दया और आत्मियता की गंगा बहने लगेगी। आज के मनुष्य की सांसारिकता में बढती लिप्तता, वैश्विक बाजारवाद और भौतिकता की चकाचौंध के कारण संत्रास, कुंठा और असंतोष दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इसी असंतोष को दूर करने के लिए संतोषी बनना आवश्यक हो गया है। सुखी और शांतिपूर्ण जीवन के लिए संतोष सफल औषधि है।

प्रश्न:

1. जीवन में संतोष सबसे बड़ा धन है– इस संदर्भ में निम्न पंक्तियॉ उद्धृत हैं। इनमें से सही विकल्प कौन–सा है?

i) 'जब आवै संतोष–धन, सब धन धूरि समान' ii) 'मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय'
iii) त्रिषु नैव कर्तव्यः iv) (i) और (ii) दोनों

2. मन के सभी विकार कब दूर हो जाते हैं?

i) जीवन में संतोष आने से ii) शुद्ध सात्विक आचरण से
iii) शुचिता का भाव रहने से iv) उपरोक्त सभी

3. मनुष्य के कुंठा, असंतोष के प्रतिदिन बढने के कारण हैं–

i) असंतोष के प्रति विशेष रुचि ii) प्रतिस्पद्र्धा के प्रति निरंतर बढ़ती रुचि
iii) सांसारिक–लिप्तता, वैश्विक–बाजारवाद और भौतिकवाद का चकाचौंध iv) उदारता, दया, प्रेम, आत्मीयता का अभाव

4. **संतोष सफल औषधि है–**

i) शांतिपूर्ण जीवन के लिए
ii) समृद्ध और सामाजिक उच्च–स्तर के लिए
iii) शुद्ध–सात्विक, आचरण और शुचिता के लिए
iv) शांतिपूर्ण ढ़ंग से आर्थिक वैभव को बनाए रखने के लिए

5. **समाज में उत्पन्न समस्याओं का प्रायः कारण है–**

i) आवश्यकता से अधिक धन जुटाना
ii) मनुष्य में संतोषी–प्रवृत्ति का न होना
iii) अनपेक्षित मनुष्यों से ईर्ष्या करना।
iv) अनपेक्षित प्रतिस्पद्र्धा करना और आगे निकलने की इच्छा रखना

2 निम्नलिखित गद्यांश को पढकर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छॉटकर लिखिए । 5

दूसरों के सुख–दुख में सच्चे अंतःकरण से दिलचस्पी लेना अच्छे संस्कार का लक्षण तो है ही, साथ ही व्यवहारकुशलता भी है जो लोगों को हमारी ओर आकर्षित करती है। हॉ, इसमें दिखावा, बनावटीपन और ऊपरी–ऊपरी शिष्टाचार नहीं होना चाहिए। जो भावना सच्ची होती है, हृदय से निकलती है, वही हृदय को बॉध भी सकती है।

मानव की दो मूल प्रवृत्तियॉ होती हैं। एक तो यह कि लोग हमारे गुणों की कद्र करें, हमें दाद दें और हमारा आदर करें और दूसरे वे हम से प्रेम करें, हमारा अभाव महसूस करें, उनके जीवन में हम कुछ महत्व रखते हैं– ऐसा अनुभव करें।

आपके जरा–से कार्य की यदि किसी ने सच्चे दिल से प्रशंसा की तो आपका दिल कैसा खिल उठता है? कोई आपकी सलाह मॉगने आता है तो आपका मन कैसे फूल जाता है?

ऊपर से कोई बड़ा आदमी कितना भी आत्मविश्वासी और आत्मसंतुष्ट क्यों न दिखाई दे, भीतर से वह हमारी–आपकी तरह प्रशंसा का, प्रोत्साहन का, स्नेह का भूखा है। यदि आप उसे, प्रामाणिकतापूर्वक ले सकें तो आप फौरन उसके हृदय के निकट पहुॅच जाएॅगे। दूसरों की भावनाओं को ठीक–ठाक समझना, उनकी कद्र करना, उनके साथ सच्चाई और स्नेह का व्यवहार करना यही व्यवहार कुशलता है। इसी से सामाजिक जीवन में लोकप्रियता के दरवाजे खोलने की कुंजी हाथ लगती है। इससे हमारी अपनी सुख–शांति बढ़ती है, सो अलग।

प्रश्न:

1. **व्यवहारकुशलता से लेखक का क्या तात्पर्य है?**

i) दूसरों की भावनाओं को समझकर उनकी कद्र करना
ii) सच्चाई व स्नेह का व्यवहार करना
iii) दूसरों के सुख–दुख में सच्चे अंतःकरण से दिलचस्पी लेना
iv) उपरोक्त तीनों

2. **मानव की दो मूल प्रवृत्तियॉ कौन–कौन सी होती है?**

i) दूसरे के गुणों की कद्र करना व उनसे प्रेम पाना
ii) दूसरों का अभाव महसूस करना
iii) दूसरों को आदर देना
iv) दूसरों का सम्मान देना व उनके जीवन में महत्व रखना

3. **सामाजिक जीवन में लोकप्रियता के दरवाजे खोलने की कुंजी है–**

i) मनुष्य की योग्यता–ऐसी योग्यता जो दूसरों पर प्रभाव जमानें में समर्थ हो
ii) मनुष्य को समय के अनुसार रंग बदलने की आदत
iii) मनुष्य की दबंगता
iv) मनुष्य का दिखावा और बनावटीपन

4. **व्यवहारकुशलता किसे कहते हैं?**

i) दूसरों की भावनाओं को समझकर सच्चाई और स्नेह का व्यवहार करना
ii) दूसरों की भावनाओं को समझकर उसके अनुकूल कार्य करना
iii) अपनी योग्यता से दूसरों की आवश्यकता को समझकर उसकी रुचि के अनुकूल कार्य करना
iv) दूसरों को समझना, दूसरों की परेशानी जानना और अपनी बताना

5. उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक चुनिए।

i) व्यवहार में कुशलता
ii) व्यवहारकुशल
iii) मनुष्य की व्यवहारकुशलता
iv) व्यावहारिकता

3 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प लिखिए । **5**

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग–मुकुट, मेखला रत्नाकर है,
नदियॉ प्रेम–विवाह, फूल तारे मंडल हैं,
बंदिजन खग–वृंद, शेषफन सिंहासन हैं
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की;
जिसकी रज में लोट–लोटकर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक–सरककर खड़े हुए हैं,
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण "धूल भरे हीरे कहलाए।,
हम खेले–कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में,
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हो मोद में।
निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है,
षट्ऋतुओं का विविध दृश्य युत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्स नहीं मखमल से कम है,
शुचि–सुधा सींचता रात में तुझ पर चंद्रप्रकाश है
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे,
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे,
लोट–लोट कर वहीं हृदय को शांत करेंगे
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे,
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जाएँगे
होकर भव–बंधन–मुक्त हम, आत्मरुप बन जाएँगे।

प्रश्न:

1. कवि अपने देश पर बलिहारी क्यों हो जाता है?

i) मातृभूमि से प्रेम कारण
ii) हरियाली के कारण
iii) प्राकृतिक मनोहरी छटा के कारण
iv) शस्य श्यामला धरती के कारण

2. कवि अपनी मातृभृमि के जल और वायु की क्या विशेषता बताता है?

i) जल–अमृत के समान, वायु–शीतल
ii) जल–उत्तम, वायु–सुगंधित
iii) जल–निर्मल, वायु–श्रम हरने वाली
iv) उपरोक्त सभी

3. मातृभूमि को ईश्वर का साकार रुप किस आधार पर बताया गया है?

i) मातृभूमि मुकुट सूर्य और चंद्र के समान
ii) शेषनाग का फन सिंहासन
iii) बादल अभिषेक करते है पक्षी चहचहाते है
iv) उपरोक्त सभी

4. धूल भरे हीरे किन्हें कहा गया है?

i) विद्वानों को
ii) देशभक्तों को
iii) मिट्टी में लोटकर बड़े होने वाली संतोनों को
iv) वीर जवानों को

5. 'पयोद' का पर्याय नहीं है–

i) बादल
ii) नीरज
iii) अम्बुद
iv) जलद

4 **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प लिखिए।** **5**

हॅस लो दो क्षण खुशी मिली गर
वरना जीवन–भर क्रंदन है।
किसका जीवन हॅसी–खुशी में
इस दुनिया में रहकर बीता?
सदा–सर्वदा संघर्षों को
इस दुनिया में किसने जीता?
खिलता फूल म्लान हो जाता
हॅसता रोता चमन–चमन है।
कितने रोज चमकते तारे
कितने रह–रह गिर जाते हैं,
हॅसता शशि भी छिप जाता है
जब सावन घन घिर आते हैं।
उगता–ढलता रहता सूरज
जिसका साक्षी नील गगन है।
आसमान को छूने वाली,
वे उॅची–उॅची मीनारें!
मिट्टी में मिल जाती हैं वे
छिन जाते हैं सभी सहारे ।
दूर तलक धरती की गाथा
मौन मुखर कहता कण–कण है।
यदि तुमको मुसकान मिली तो
मुसकाओ सबके संग जाकर।
यदि तुमको सामर्थ्य मिला तो
थामो सबको हाथ बढ़ाकर ।
झॉको अपने मन–दर्पण में
प्रतिबिंबित सबका आनन है ।

प्रश्न:

1. कवि के अनुसार जीवन में–

i) क्रंदन ही क्रंदन है
ii) थोड़े से सुख हैं
iii) संघर्ष ही संघर्ष है
iv) सुख और दुख आते–जाते हैं

2. कवि दो क्षण के लिए मिली खुशी पर हॅसने के लिए क्यों कह रहा है?

i) खुशी के क्षण में हॅस लेना
ii) आपदाओं में भी हॅस लेना
iii) अवसर मिले तब हॅस लेना
iv) उपरोक्त तीनों

3. कविता में संसार की किस वास्तविकता को प्रस्तुत किया गया है?

i) नश्वर
ii) नाशवान
iii) क्षणभंगुर
iv) इनमें से कोई नहीं

4. 'मिट्टी में मिल जाने' से कविता का क्या आशय है?

i) ढ़ह जाना
ii) सब कुछ नष्ट होना
iii) दुख छा जाना
iv) प्रलय होना

5. 'इच्छा' का पर्याय नहीं है–

i) चाहना
ii) चाह
iii) अभिलाषा
iv) कामना

खण्ड 'ख'

5 **(क) 'शब्द' कब पद का रुप ले लेता है?** **1**

(ख) नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए। **3**

(i) एक कुत्ता तीन **टॉगो के बल रेंगता** चला आ रहा है।
(ii) यह सुरजीत हमेशा कोई न कोई **शरारत करता रहता** है।
(iii) ततॉरा की तलवार एक **विलक्षण रहस्य** थी ।

6 **रेखांकित शब्दों का पद–परिचय दीजिए।**

(क) <u>**गणतंत्र दिवस पर**</u> जगह–जगह राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। 1

(ख) वह मेरी बात <u>**चुपचाप**</u> सुन रहा था। 1

(ग) <u>**यह**</u> किताब मेरी है। 1

7 **निम्नलिखित वाक्य निर्देशानुसार बदलिए।**

(क) वामीरों सचेत होकर घर की तरफ दौड़ी। **मिश्र वाक्य में बदलिए।** 1

(ख) जीवन में पहली बार इस तरह मैं विचलित हुआ हूँ। **संयुक्त वाक्य में बदलिए।** 1

(ग) यदि प्रधानाध्यापक आते तो कार्यक्रम शुरु हो जाता। **रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए।** 1

8 **(क)** 'इति + आदि' **की संधि कीजिए ।** 1

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो का संधि–विच्छेद करें। 2

अभीष्ट, शुभारंभ, महेंद्र

(ग) निम्नलिखित में से किन्ही दो समस्त पदों का विग्रह कर भेद लिखिए। 2

चौराहा, पूजा–अर्चना, हवनसामग्री, परमानंद

(घ) 'कला में निपुण' **का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए।** 1

9 **(क) निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों में से किन्ही दो का वाक्य प्रयोग करें ताकि इसका अर्थ स्पष्ट हो जाए।** 2

i) बाट जोटना
ii) सॉतवें आसमान पर होना
iii) रंग दिखाना
iv) अंधे के हाथ बटेर लगना

(ख) उपर्युक्त मुहावरें अथवा लोकोक्ति द्वारा खाली स्थान भरें । 2

(i) बच्चे को इस प्रकार समझाओ कि वह अपनी गलती में सुधार कर ले और उसे शर्मिंदा भी न होना पडे। इसी में भलाई है कि ———————————— न टूटे।
(ii) कोई भी बात मुँह से निकालने से पहले ———————————— लेनी चाहिए।

<u>खण्ड 'ग'</u>

10 **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।** 5

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हॉने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची ।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बातॉ सरसी।

प्रश्नः

1. मीरा कृष्ण से क्या प्रार्थना कर रही है?

i) अपनी सेविका बना लेने की
ii) भक्ति प्रदान करने की
iii) अपने दुख दूर करने की
iv) भवसागर से पार उतारने की

2. चाकर रहस्यूँ, बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।' का आशय है–

i) आपकी दासी बनकर मैं रोज आपके दर्शन पाऊँगी
ii) आपकी भक्ति पाकर मैं बाग लगाऊँगी और आपके दर्शन करुँगी
iii) आपके पास रहकर मैं आपकी सेवा करुँगी और आपके दर्शन पाऊँगी
iv) आपकी दासी बनकर, बाग लगाऊँगी और रोज आपके दर्शन करुँगी

3. मीरा कृष्ण की लीलाओं का गुणगान कहाँ करना चाहती हैं?

i) यमुना के तट पर
ii) कदंब के वृक्ष के नीचे
iii) वृंदावन की कुँज गलियों मे.
iv) गोकुल की कुंज गलियों मे

4. कृष्ण की चाकरी करने पर मीरा को कौन–सी जागीर प्राप्त होगी?

i) श्रीकृष्ण के दर्शन की
ii) उनकी भक्ति की
iii) उनकी सेवा की
iv) इनमें से कोई नहीं

5. मीराबाई श्रीकृष्ण की चाकरी करना चाहती हैं, क्योंकि–

वे श्रीकृष्ण की सेवा करना चाहती हैं
i) वे श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करना चाहती हैं
ii) वे प्रतिदिन उनके दर्शन करना चाहती हैं
v) उपर्युक्त सभी

अथवा

गिरि का गौरव गाकर झर–झर
मद में नस–नस उत्तेजित कर
मोती की लडियों–से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ–उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।

प्रश्नः

1. किसे 'गिरी का गौरव गाने वाले' कहा गया है?

i) पर्वत पर खिलने वाले पुष्पों को
ii) पर्वत पर खड़े वृक्षों को
iii) पर्वत की उँची–उँची चोटियों को
iv) पर्वत से झरने वाले झरनों को

2. झरने क्या कर रहे हैं?

i) बहुत उँचाई से गिर रहे हैं
ii) मोती की लड़ियाँ वृक्षों को
iii) पर्वतों का यशगान कर रहे हैं
iv) दृश्य को सुंदर बना रहे हैं

3. **झरने किसके समान लग रहे हैं?**

i) उच्चाकांक्षाओं के समान
ii) गौरव के समान
iii) मोती की माला
iv) फूलों की लडियों के समान

4. **मद में नस–नस उत्तेजित कर' पंक्ति का आशय है–**

i) इनका सौंदर्य तन–मन में उल्लास,उमंग और स्फूर्ति का संचार कर देता है
ii) इनका सौंदर्य मादक है
iii) इनका सौंदर्य उत्तेजित करने वाला है
iv) उपर्युक्त सभी

5. **वृक्ष आकाश की ओर कैसे देख रहे हैं?**

i) एकटक, प्रसन्न अटल रहकर
ii) प्रसन्न, अटल, चिंतित रहकर
iii) एकटक, अटल, चिंतित रहकर
iv) चिंतित, उत्साहित, एकटक रहकर

11 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर संक्षेप में लिखिए । 6

क) जुलूस के लालबाजार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?
ख) प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति–प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?
ग) दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।– आशय स्पष्ट करें।

12 आपके माता–पिता द्वारा दी जा रही हिदायतों और पढ़ाई के लिए डॉट–फटकार के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया होती है। अपने अनुभव बड़े भाई साहब पाठ के आधार पर लिखिए। 5

अथवा

निःस्वार्थ भाव से किया गया त्याग समाज में परंपराओं का परिवर्तन कर देता है? तॅतारा वामीरो कथा के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

13 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5

'तीसरी कसम' यदि एकमात्र नही ंतो चंद उन फिल्मों में से है जिन्होंने साहित्य–रचना के साथ शत–प्रतिशत न्याय किया हो। शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को 'हीरामन' बना दिया था। हीरामन पर राजकपूर हावी नहीं हो सका। और छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध उॅचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था। कजरी नदरी के किनारे उकडू बैठा हीरामन जब गीत गाते हुए हिराबाई से पूछता है 'मन समझती हैं न आप?' तब हीराबाई जुबान से नहीं, ऑखों से बोलती है। दुनिया–भर के शब्द उस भाषा को अभिव्यक्ति नहीं दे सकते। ऐसी ही सूक्ष्मताओं से स्पंदित थी– 'तीसरी कसम'। अपनी मस्ती में डूबकर झूमते गाते गाडीवान–'चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजड़े वाली मुनिया।' टप्पर–गाडी में हीराबाई को जाते हुए देखकर उनके पीछे दौड़ते–गाते बच्चों का हुजूम–'लाली–लाली डालिया में लाली रे दुल्हनियॉ, एक नौटंकी की बाई में अपनापन खोज लेने वाला सरल हृदय गाड़ीवान! अभावों की जिंदगी जीते लोगों के सपनीले कहकहे।

प्रश्नः

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

(ख) 'तीसरी कसम' फिल्म की क्या विशेषता है?

(ग) 'हीरामन पर राजकपूर हावी न हो सका'– तात्पर्य स्पष्ट करें।

(घ) 'अभावों की जिंदगी में जीते लोगों के सपनीले कहकहें, किस बारे में कहा गया हैं?

अथवा

मगर टाईम–टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूरी बात । पहिले ही दिन उसकी अवहेलना शुरु हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके–हलके झोंके, फुटबाल की वह उछल–कूद, कबड्डी के वाह दॉव–घात, वॉलीबाल की वह तेजी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रुप से खींच ले जाती और वहॉ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाईम–टेबिल, वह ऑखफोड पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता । मैं उनके साये से भागता, उनकी ऑखों से दूर रहने को चेष्टा करता, कमरें में इस तरह दबे पॉव आता कि उन्हें खबर न हो उनकी नजर मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेश सिर पर एक नंगी तलवार–सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकडा रहता हैं, मैं फटकार और बुडकियॉ खाकर भी खेल–कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

प्रश्नः

(क) कहानी तथा कहानीकार का नाम लिखिए।

(ख) टाईम–टेबिल बना लेने पर भी उस पर अमल क्यों नहीं हो पाया?

(ग) खेलकर वापस आने पर छोटे भाई की क्या प्रतिक्रिया होती?

(घ) लेखक स्वयं को किस बंधन में जकड़ा पाता है और क्यों?

14 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन के उत्तर लिखिए। 9

(क) ईश्वर कण–कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

(ख) मीराबाई श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या–क्या कार्य करने को तैयार है?

(ग) पावस ऋतु में प्रकृति में कौन–कौन से परिवर्तन आते है? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

15 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लिखिए। 6

(क) हरिहर काका के मामले में गॉव वालों की क्या राय थी स्पष्ट कीजिए।

(ख) वर्तमान समय में हम अपने पारीवारिक रिश्तों को सुरक्षा कहॉ तक कर पा रहे हैं? अपनी राय लिखिए।

(ग) 'हरिहर काका' कहानी में ठाकूरबारी की प्रसिध्दि के कारण अपने शब्दों में लिखिए।

16 हरिहर काका जैसे अपने ही घर में उपेक्षित वृध्दों के प्रति समाज की भूमिका क्या होनी चाहिए ? चार तर्क देकर अपनी बात स्पष्ट कीजिए। 4

अथवा

वर्तमान समय में स्वार्थ–लोलुपता किस प्रकार हमारे समाज को विकृत कर रही है? पाठ के आधार पर बताइए।

खण्ड 'घ'

17 दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 80–100 शब्दों मे अनुच्छेद लिखिए। **5**

(क) स्मार्ट क्लास

- स्मार्ट क्लास क्या है
- छात्रों में आकर्षण का केंद्र
- छात्रों पर प्रभाव

(ख) दैव–दैव आलसी पुकारा

- आलसी है दैव का सहारा लेता है–
- भाग्यवादी निकम्मा होता है–
- निराश, उदासीन और परिक्षित रहता है–
- परिश्रम सौभाग्य का निर्माता

(ग) जल है तो कल है

- जल का महत्व
- जल प्रदूषण
- जल को बचनाने के उपाय

18 दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण परीक्षा देने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। **5**

अथवा

पनवेल में बिजली संकट से उत्पन्न होनेवाली कठिनायों का वर्णन करते हुए दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र–लिखिए।